REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 9 | JUNE - 2018

औरंगजेब सामायिक ब्रज प्रदेश में वीरवर चूरामन का विद्रोह : एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य, एच के एल कालेज ऑफ ऐजूकेशन,
(सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़) गुरूहरसहाय, फिरोजपुर.
(पंजाब) .

प्रस्तावना :

चूरामन, ब्रजराज का सुयोग्य पुत्र था। इसने रूपबास, बाड़ी, बसेड़ी, सर मथुरा, बयाना तथा कठूमर के घने जंगलों के मध्य गुरिल्ला युद्ध में दक्ष जाटशक्ति का एक दल गठित किया। छापामार रणनीति के माध्यम से आगरा, दिल्ली, रणथम्भौर सरकारों के मध्य लूटपाट कर अराजकता की स्थिति उत्पन्न की। इसने जाटशक्ति के पुरोध राजाराम के समय से ही गुरिल्ला युद्ध का संचालन किया था तथा इसकी कार्यवाहियों का जाट, चमार, राजपूत, जादौं, गुर्जर तथा मीणाओं ने हार्दिक रूप से इसका साथ दिया था। चूरामन की गतिविधियां इतनी बढ़ गयी थीं कि आमेर राजा विशन सिंह कछवाह और एक सेनापति हरी सिंह खांगरोत इसे किसी भी रणनीति से पकड़ने या नेस्तानाबूत करने में असफल रहे थे। उसने अपने अनुभवों तथा स्वतंत्रता प्रेमी गतिविधियों से दीर्घकालिक समाज सेवा एवं तपस्या के कारण जाट कबीलों का नेतृत्व संभालने की क्षमता अर्जित कर ली थी।

सिनसिनी में अपने पिता ब्रजराज एवं बड़े भाई भावसिंह की मृत्यु के कारण विभिन्न क्रान्तिकारी जाट सरदारों के साथ सिनसिनी लौट आया। सिनसिनी लौट आने पर इसका स्वागत किया गया और सिनसिनी जाट मुखियाओं की पंचायत ने गम्भीरता पूर्वक विचार विमर्श के पश्चात अब तक के कार्यों को विश्लेषित किया। बड़े–बड़े कारवां एवं धनी यात्रियों को लूटना उसका कार्य था। उसने थोड़े समय में ही अपने नियंत्रण में 500 घुड़सवारों एवं 1000 पैदल सिपाहियों की संगठित सेना बना ली थी। हाथरस और मुरसान क्षेत्र का नन्दा जाट 100 घुड़सवारों के साथ उसकी सेना में शामिल हो गया था। चूरामन व्यपारियों को लूटकर अपने आपको स्थापित करने में सक्षम हुआ था। इसने आगरा से 48 कोस एक स्थान बनाया जहॉ यह अपनी लूट माल छिपाया करता था। धीरे–धीरे यह मिटटी के किले के रूप में परिवर्तित हो गया जिसे बाद में भरतपुर नाम दिया गया।[1]

अत्यंत साहसी होने पर लोगों ने उन्हें बढ़ावा दिया उसने न केवल अपने सैनिकों की संख्या बढ़ाई अपितु घुड़सवारों और पैदल सैनिकों की संख्या बढ़ाकर अपनी शक्ति बढ़ायी। इस प्रकार शीघ्र ही इसे अपने पैरों पर खड़ा कर दिया..... और दरबार के अनेक मंत्रियों के घर डाके डालकर शाही खजाने पर आक्रमण कर के उसने स्वयं को अत्यन्त सुव्यवस्थित रूप से मजबूत किया।[2]

1690 ई0 से लेकर 1695 ई0 तक राजा विशन सिंह ने जाट शक्ति के दमन के लिये अभियान चलाया था। राजा के सेनापति हरी सिंह खांगरोत से बचने के लिये स्वतंत्रता प्रेमी चूरामन इधर–उधर शरण लेते रहे। राजपूत सैनिकों द्वारा सिनसिनी 1690 को घेरने के आधार पर फतेहसिंह को नेतृत्व तथा संगठन क्षमता में अयोग्य समझकर इसे जाट पंचायत का प्रधान निर्वाचित किया।[3]

चूरामन गठे हुये बदन का छरहरा युवक था। उसकी भुजायें उसके घुटने तक पहुंचती थीं तथा आंखे निर्भयता से चमकती थीं। वह अत्याचार के विरूद्ध कान्तिकारी भावनायें रखता था। वह एक श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ, योद्धा, निर्भीक, योग्य क्षमतावान, गुरिल्ला युद्ध में निपुण, अवसरवादी, चतुर प्रशासन एवं अच्छा मित्र था। इसमें एक नेता के सभी आवश्यक गुण मौजूद थे। यह मजबूत शरीर, समझदार, युक्ति पूर्ण ढंग से सामंजस्य बिठाने वाला, उच्च कोटि का व्यावहारिक एवं तीव्र विरोधी स्वभाव का था जो उसको गुरिल्ला युद्ध का योद्धा बनाता

है।[4] उसके चरित्र में जाटों की दृढ़ता तथा मराठों की चतुर राजनीति थी।[5] उसकी संगठन के प्रति साधारण क्षमता और प्रभावी राजनीति ने न केवल विभिन्न जाट नेताओं को संगठित किया अपितु उन्हें जाट आंदोलन के लिये प्रेरित भी किया।

चूरामन, चिकसना के चौधरी चन्द्रसिंह की पुत्री अमृतकौर का पुत्र था। चूरामन जाट शक्ति के क्षितिज पर जिस प्रकार अपनी योग्यता से प्रकाशित हुआ था उस सम्बंध में इमाद उस सादात के लेखक ने लिखा है कि चूरामन ने अपना कार्य गिरोह के नेता के रूप में निडरता एवं बहादुरी से निकला और अपने को सुरक्षित रखने के लिये सौख गुर्जर नामक गढ़ी पर अधिकार कर लिया। चूरामन जानता था कि जाट सरदारों की एकता निर्माण करा कर पींगौरा तन 1692 ई0 के बाद अन्य राजपूत गढ़ियों पर धीरे–धीरे व संगठन के अभाव में क्रान्ति की ज्वाला को अधिक प्रज्वलित नहीं किया जा सकता। साधारण गढ़ियों एवं किलों के माध्यम से शाही सेना की शोषण नीति का पुरजोर मुकाबला नहीं किया जा सकता। अन्ततः उसने गुरिल्ला नीति को अपनाया। तत्पश्चात उसने अपनी महत्वकांक्षाओं तथा कल्पनाओं को साकार रूप देने के लिये नरूका राजपूत, बयाना, हिण्डोन के पंवार राजपूत, खानुआ, तथा कांगारोल के जाटों को भी अपने में मिलाया। उसने यमुनापार के जाटों को तथा सौंख, अड़ीग, पेंठा तथा सोनोट के कुन्तल जाटों से भी अपने सम्बंध बनाये। इसके साथ–साथ मेडू, मुरसान तथा सासनी के सुप्रसिद्ध छापामार सरदार इसकी सेना में आ गयी।[6]

सरदार चूरामन, औरंगजेब द्वारा सर्वाधिक वांछित व्यक्ति था इसके अतिरिक्त वांछनीय व्यक्ति की सूची में लोढा, बुंका, अविराम, अलिया जाट के पुत्र नंदा और उसके भाई जगमन और बनारसी जाट थे। चूरामन की नीति किसी सुरक्षित दुर्ग में पनाह लेने की नहीं थी अपितु चुनिन्दा घुड़सवारों के साथ स्वतंत्रता का अलख जगाये रखना तथा जनसाधारण को इसके लिये तैयार करने की थी। वह स्वतंत्र रूप से गतिविधियों का संचालन करता तथा मुगल सेनाधिकारियों पर अचानक आकमण कर उन्हें हताश कर देता था। जुलाई 1696 ई0 में विशन सिंह के वेदारबख्त के साथ काबुल जाने के बाद चूरामन ने अपनी स्थिति मजबूत की और जाटौली धून[7] में एक किला स्थापित किया और इसे अपनी गतिविधियों को प्रधान केन्द्र बनाया।[8] चूरामन ने अपनी टुकड़ियों को मुगल सेनानायकों से मुठभेड़ लेने की विधिवत शिक्षा देकर पूरा सिपाही बनाया और बन्दूक, तलवार, नुकीले बर्छों तथा भालों से सुसज्जित करके नियमित परेड का अभ्यास कराना प्रारम्भ किया।[9] इमाद उस्सात के लेखक के अनुसार वह सर्वप्रथम अपने लुटेरा दल के साथ कोटा–बूंदी की ओर लूटमार करने के लिये गया और मार्ग में उसने केवल व्यपारियों तथा पथिकों के काफिले को ही नहीं लूटा बल्कि दक्षिण मुहिम पर जाती हुयी सेना, शाही मंत्री, परगनों का खजाना, सैनिक वस्त्रागार और शाही शस्त्रागारों को निर्भीकता के साथ बुरी तरह तंग किया व लूटा। इसी प्रकार की एक अन्य घटना का उल्लेख करते हुये इमाद कहता है एक रात्रि को वह अपने सवारों के साथ शाही लश्कर पर टूट पड़ा। उसको बुरी तरह लूटा। मुगल सिपाही जो कुछ उस समय उनके हाथ लग सका साथ लेकर भाग निकले और उन्होंने पहाड़ की कन्दराओं में छिपकर अपनी जान बचाई।

चूरामन ने अनेक मुसलमानों के साथ काम किया। उनके साथ युद्ध भी लड़ा। वह किसी के प्रति भी निष्ठावान नहीं रहा। वह कठोर व्यवहारिक राजनीतिज्ञ था। जिसने स्वामिभक्ति, सम्मान, प्रेम जैसी उत्तम भावना के वशीभूत होकर अपना विवेक नहीं खोया। वस्तुतः उसके हदय में इन विचारों के लिये स्थान नहीं था। तथापि वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने जाटों की किस्मत का निर्माण किया।[10]

जाट शक्ति का नेतृत्व चूरामन के हाथों में था। दीर्घ तथा नियमित संघर्ष के बाद उसने मुगल सम्राटों को शक्ति के द्वारा बाध्य करना प्रारम्भ कर दिया कि ब्रजप्रदेश के मजदूर किसानों की भावनाओं का आदर करते हुये जाटों को भी राजनैतिक स्वर का सम्मान प्रदान करें। इस कार्य को सम्पन्न करने के लिये उसके सैनिकों की संख्या धीरे–धीरे 14 हजार तक पहुंच गई जिसको उसने बन्दूकों तथा तापों से सुसज्जित किया।[11]

एक दशक से भी अधिक समय से ब्रजप्रदेश की जाटशक्ति स्वतन्त्रता के लिए प्रयासरत थी तथा इसके इन प्रयासों को समस्त जातियों का समर्थन प्राप्त हो रहा था। औरंगजेब की नीतियों के कारण जो अराजकतापूर्ण अव्यवस्था फैली हुई थी उससे ब्रजप्रदेश का प्रशासन पूर्ण रूपेण अस्त–व्यस्त हो चुका था। डॉ0 सरकार ने इस सम्बन्ध में कहा है, अपर्याप्त खर्च और दक्षिण के अभिछिन्न युद्धों का उत्तर भारत की स्थिति पर विपरीत प्रभाव पड़ा।[12] उत्तरी भारत की जन एवं धन शक्ति के आधार पर औरंगजेब दक्षिण में युद्ध कर रहा

था। इसका भार उत्तरी भारत की जनता आर्थिक रूप से कष्ट सहते हुए उठा रही थी। उत्तरी भारत के अधिकारियों को समय–समय पर वेतन–भत्ते तथा अन्य मदद प्राप्त नहीं हो रही थी। फलतः वह कान्तिकारियों के विरूद्ध साधनहीनता के कारण कार्यवाहियों को करने में असमर्थ थे।

जाट शक्ति का नेतृत्व सम्भालने के पश्चात चूरामन अपनी मातृभूमि को मुगलों से मुक्त कराने का पुनीत कार्य शीघ्रातिशीघ्र करना चाहता था। उसने मुगलों की कमजोरियों पर प्रहार करते हुए लगभग 1704 ई0 में अपनी मातृभूमि पर अधिकार कर लिया।[13] सिनसिनी की गढ़ी जर्जर अवस्था में थी, इसलिये उसने वहॉ मरम्मत का कार्य प्रारम्भ कर दिया। कान्तिकारियों के लिए सिनसिनी की गढ़ी एक प्रमुख शक्तिशाली गढ़ी के रूप में थी इसलिए इन्होंने इसको मजबूत स्थिति प्रदान की।

औरंगजेब ने सिनसिनी में जाटशक्ति के अधिकार के बारे मे जानकारी प्राप्त होते हुए उसने इसके सामरिक महत्व को समझते हुए शहजादा वेदारबख्त को मालवा में सिनसिनी गढ़ विजित करने का शाही फरमान भिजवाया। किन्तु किन्ही कारणों से वह इस अभियान में शामिल न हो सका। अन्ततः सितम्बर 1705 ई0 में औरंगजेब ने ब्रजप्रदेश की प्रशासनिक व्यवस्था में परिवर्तन किये। जिसके तहत बाकई खां शीला के पुत्र बाकई खां के मनसब में 500 जात की वृद्धि करके उसको आगरा किले का किलेदार बनाया। जबकि मुख्तियार खां ने आगरा के आस पास के क्षेत्रों में शान्ति स्थापित करने के लिए फौजी कार्यवाहियां आरम्भ की। इसी क्रम में दूसरी ओर स्वतन्त्रता प्रेमी वीर शिरोमणी सरदार चूरामन ने आगरा के सीमान्त मार्गों को बन्द कर दिया।[14] शाही आदेश के पालनार्थ मुख्तियार खां ने मेवात के फौजदार की सहायता लेकर अक्टूबर 1705 ई0 में सिनसिनी जीतने के लिए प्रस्थान किया। वह सिनसिनी के विषय में पूर्व में चर्चा में सुन चुका थ। अतः भारी सुरक्षा बन्दोवस्त के साथ अक्टूबर 1705 में गढ़ी को विजित कर लिया। औरंगजेब आलमगीर ने जब सिनसिनी विजय का समाचार सुना तो उसने वेदारबख्त के ससुर मुख्तियार खां के मनसब में 500 जात की वृद्धि करके उसे सम्मानित किया।[15] इस गढ़ी के मुगलों के हाथ में आ जाने से स्वाधीनता प्रेमी ब्रजप्रदेश के क्रान्तिकारी हताश नहीं हुए वरन वह मुगलों से बार–बार टक्कर लेकर अपनी सैनिक शक्ति की दृढ़ता को आंकलन कर रहे थे। मुगल सम्राट औरंगजेब की 20 फरवरी 1707 में मृत्यु के पश्चात चूरामन ने मुगल साम्राज्य की दलगत राजनीतिक में भाग लिया तथा मुगल सम्राटों को बनाने तथा बिगाड़ने में महती भूमिका का निर्वाह किया।

चूरामन ने अपनी शक्ति के बल पर हिन्दुस्तान के सभी शाही मार्गों को लूटमार कर बन्द कर दिया। 8 जून 1708 को 63 वर्षीय मुहम्मद शाहआलम तथा मोहम्मद आजमशाह बहादुरशाह के मध्य जाजउ के मैदान में युद्ध हुआ। जिसमें चूरामन ने अत्याधिक सैन्य बल, साजो–सामान व अकूत सम्पत्ति प्राप्त की। तत्पश्चात मुहम्मद मुअज्जम ने बहादुर शाह की उपाधि धारण कर चूरामन को 16 सितम्बर 1707 में 1500 जाट व 500 सवार का मनसब देकर सम्मानित किया। उसने चूरामन को साम्राज्य की सेवा में शामिल भी किया।

चूरामन ने अपनी शक्ति को लगातार सुदृढ़ करते हुए मुगलों के पारस्परिक संघर्षों में भाग लिया। मिर्जा शाहनवाज ने, मार्च सन 1712 में राजकुमार अजीमुश्शान के विपरीत चूरामन से सहायता की याचना की थी। इसका तात्पर्य यह है कि उस समय तक चूरामन एक शक्ति के रूप में उभर आया। उसको दबाना मुगल–शासन के लिए सरल कार्य न रह गया था।

चूरामन अत्यन्त सूझ–बूझ का व्यक्ति था। उसका असली शत्रु मुगल शासन था। उसको दुर्बल बनाने के लिए वह उचित तथा अनुचित की चिन्ता नहीं करता था। वह जनता के शत्रु को प्रत्येक माध्यम से शक्तिहीन करने के पक्ष में था। इस दृष्टि से वह चाणक्य तथा मैकियावली के सिद्धांतो को मानने वाला था। अपने उदेश्य की प्राप्ति हेतु उसे साधनों की चिन्ता नहीं रहती थी। अतः अवसर लगते ही युद्ध–भूमि से ही प्रत्येक पक्ष की सेना के कोष तथा शस्त्रागार छीन लिया करता था। उसने एक बार अफगान, मुगल तथा उमर खां रूहेला की सम्मिलित सेना को धूल चटा कर अपनी शक्ति की दृढ़ता का परिचय दिया। इसके पूर्व वह गोपाल सिंह भदौरिया, किशनगढ़ के राजबहादुर तथा शाही सेना के सम्मिलित प्रयास को विफल कर चुका था। जफर खां, मुजफफर खां तथा मुहम्मद खां वंश ने उनकों समाप्त करने का पूरा प्रयत्न किया, किन्तु अपराजेय रहा। उसको अपना मित्र बनाने तथ साम्राज्य में शान्ति स्थापित करने के उदेश्य से बादशाह फरूर्खसियार ने भरतपुर, मलाह, अघापुर, बाढ़ा और इकरन का क्षेत्र जागीर के रूप में प्रदान कर दिया। इसके पश्चात चूरामन को दिल्ली से धौलपुर तक के मार्ग पर चुंगी वसूल करने का अधिकार भी सौंपा गया। यह सब मुगल शासन की विवशता थी।

चूरामन का एक ही उदेश्य था मुगल शासन को कमजोर किया जाये। उससे अधिकार भी लिया जाये तथा कोष व शस्त्रागार भी छीना जाये।

बादशाह मुहम्मदशाह ने पुनः राजा जयसिंह को इन विद्रोहियों के उन्मूलन का दायित्व सौंपा। एक ओर राजा जय सिंह इनके विनाश की योजना बना रहे थे। दूसरी ओर चूरामन पारस्परिक गृह कलह के शिकार हो गए थे। इनके पुत्र माहकम सिंह को इनके भतीजे बदन सिंह की विकसित शक्ति का सन्देह था। जाति बिरादरी के दबाव पर बदन सिंह को मुक्त तो कर दिया गया किन्तु दोनो में अविश्वास की दरारें गहराती चली गई और वे एक दूसरे के सख्त विरोधी होते गये। दुष्परिणामों को देखने से पूर्व चूरामन ने प्राण त्याग दिये। तत्पश्चात 18 नवम्बर सन 1722 को थून पर मुगल सेना का अधिकार हो गया। ब्रज की विरोधी जनता की शक्ति का पराभव यहा आकर हो गया। यहॉ से राजा जय सिंह की कृपा से उत्पन्न एक राज शक्ति अस्तित्व में आई। इसे राष्टीय स्वरूप देने का प्रयास महाराज सूरजमल ने किया।

सन्दर्भ–

1. उपरोक्त : पृ0 26।
2. सरकार : औरंगजेब पृ0 400। कानूनगो : जाटों का इतिहास, पृ0 26–27।
3. ओडायर : फाइनल सैटलमैंट रिपोर्ट भरतपुर स्टेट, भाग 3, पृ0 25। विधावाचस्पति : मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण पृ0 275। दीक्षित : ब्रजेन्द्र वंश भास्कर, पृ0 187।
4. के0 नटवर सिंह : महाराजा सूरजमल।
5. कानूनगो : जाटों का इतिहास, पृ0 26।
6. दीक्षित : ब्रजेन्द्र वंश भास्कर, पृ0 19।
7. सिनसिनी के पश्चिम में 8 मील।
8. दीक्षित : ब्रजेन्द्र वंश भास्कर, पृ0 20।
9. सरकार : औरंगजेब पृ0 302। महाराज कुमार : मुगलकालीन ब्रजप्रदेश, पृ0 167।
10. कानूनगो : जाटों का इतिहास, पृ0 26।
11. विधावाचस्पति : मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण पृ0 276। सरकार : औरंगजेब, भाग–5, पृ0 302।
12. उपरोक्त : भाग–5, पृ0 541।
13. उपरोक्त : पृ0 302। महाराजकुमार : मुगलकालीन ब्रजप्रदेश, पृ0 167। कानूनगो : जाटों का इतिहास, पृ0 27।
14. मनूची : स्टोरिया दी मोगर, भाग–4, पृ0 242।
15. उपरोक्त : पृ0 । सरकार : औरंगजेब भागः4, पृ0 303। इर्विन : लेटर मुगल्स, भागः1, पृ0 322 कानूनगो : जाटों का इतिहास, पृ0 27।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

1. प्रो0 इन्द्र विद्याचस्पति : मुगल साम्राज्य का क्षय और उसका कारण, 1949, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई।
2. एन0 मनूची : स्टोरिया डी मोगोर, अनुवादक विलियम इर्बिन, भाग–1 से 4, 1907।
3. एम0 एफ0 ओडायर : फाइनल सेटिलमेन्ट रिपोर्ट, भरतपुर स्टेट, तृतीय भाग, मुद्रण 1900–1901 ई0।
4. कालिका रंजन कानूनगो : डिग्गी, हिस्ट्री ऑफ दि बारोनिकल हाउस ऑफ डिग्गी।
5. उपरोक्त : जाटों का इतिहास, मयुर पेपर बैंक्स, दिल्ली, 1996।
6. गोकुल चेन्द्र दीक्षित : ब्रजेन्द्र वंश भास्कर, हिन्दू धर्म संरक्षिण सभा, 1993 वि0सं0।
7. नटवर सिंह : महाराजा सूरजमल, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0, नई दिल्ली, 1987।
8. महाराजकुमार : मुगलकालीन ब्रजप्रदेश, 1536–1718 ई0, अखिल भारतीय मण्डल, मथुरा।
9. विलियम इर्विन : मुगल लेटर मुगल्स खण्ड 1–2, सम्पादक डॉ0 जदुनाथ सरकार।

10. डॉ0 जनुनाथ सरकार : हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब, भाग–5, 1925,25,28,30,24, कलकत्ता।
11. उपरोक्त : फाल ऑफ दी मुगल एम्पायर, भाग–2, हिन्दी अनुवाद।
12. उपरोक्त : मुगल साम्राज्य का पतन, भाग–2, अनुवादक डॉ0 मथुरा लाल शर्मा।
13. डॉ0 धर्मचन्द विद्यालंकार : जाटों का नया इतिहास।
14. ईसरदास नागर : फारसी पाण्डुलिपि, फतूहात–इ–आलमगीरी, नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ।
15. मुंशी देवी प्रसाद : औरंगजेबनामा, भाग–3।
16. उपेन्द्र नाथ शर्मा : जाटों का नवीन इतिहास, मंगल प्रकाशन, जयपुर, 1977।
17. कृष्ण दत्त वाजपेयी : ब्रज का इतिहास, अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा, संवत 2011।
18. प्रो0 चिन्तामणि शुक्ल : मथुरा जनपद का राजनैतिक इतिहास, 1955।
19. झारखण्डे चौबे एवं डॉ कन्हैयालाल श्रीवास्तव : मध्ययुगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, (उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान), लखनऊ, 1979।
20. देशराज शर्मा : जाट इतिहास।
21. प्रभुदयाल मीतल : ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास, राजकमल प्रकाशन पटना, 1966।
22. मथुरा लाल शर्मा : हिस्ट्री ऑफ जयपुर, जयपुर, 1669।
23. रामवीर शर्मा : जाटों का गौरवशाली इतिहास, मनु प्रकाशन, भरतपुर, 1991।

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य, एच के एल कालेज ऑफ ऐजूकेशन, (सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़)
गुरूहरसहाय, फिरोजपुर. (पंजाब) .